संगीत–उद्‌गम एवं विकास

डां. चित्रा चौरसिया
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संगीत विभाग, आर्य कन्या डिग्री कालेज, इलाहाबाद

Received: September 13, 2018 Accepted: October 26, 2018

ABSTRACT

Keywords: संगीत, नादब्रह्म, मुसिका, नाद, नटराज, फ्रायड, उद्‌गम।

प्रस्तावना–भारत में संगीत कला का प्रारम्भ वैदिक काल से सुसंस्कृत रूप से प्राप्त होता है, विभिन्न शास्त्रकारों ने इसे अपने–अपने ढंग से परिभाषित किया है। संगीत कला के आदि प्रेरक शिव, ब्रह्म, सरस्वती, गन्धर्व, किन्नर आदि माने गये हैं। ऐतिहासिक उल्लेखों के अनुसार भारतीय मनीषियों, ग्रन्थकारों, विभिन्न पुराणों आदि में संगीत की उत्पत्ति के भिन्न–भिन्न मत है। इसके अतिरिक्त पाश्चात्य विद्वानों जैसे–फ्रायड, जेम्स लॉग तथा फारसी विद्वानों ने भी संगीत के विभिन्न मत बताए हैं।संगीत का जन्म कब, कैसे हुआ यह कोई समझ न सका। जिसप्रकार आकाश की व्याप्ति चराचर में है, उसी प्रकार से संगीत की है।संगीत के उद्‌गम, विकास आदि के बारे में कई भ्रान्तियाँ प्रचलित है जोक्रमशः इस प्रकार है– श्री मद्‌भागवत के अनुसार अखिल विश्व केजीवनदाता भगवान परमेंष्ठि 'ब्रह्मा' ने अपने कंठ तालू आदि स्थानों केसंघर्ष से प्रथमतः अनाहत नाद संगीत का सृजन किया, जिससे 'अ' कार'उ' कार तथा 'म' कार रूप तीन मात्राओं स युक्त होकर ओंकारसंगीतमय मंत्र प्रगट हुआ। हर ललित कला का उद्‌गम प्रवृत्ति काअनुसरण करने की मानव की प्रवृत्ति मे होता है। संगीत भी इससे अछूतानहीं रहा। संगीत एक अनुभूति है जिसकी अभिव्यक्ति ध्वनि के माध्यम सेहोती है। आदि मानव ने नदी की कल–कल, हवा की सायं–सायं, बरखाके बूंदा की टप–टप, कोयल की कूक् तथा अन्य अनेक मनमोहकध्वनियों से आनन्दित होकर उनका अनुसरण करना चाहा और तभीसंगीत की उत्पत्ति हुई। '**संगीत मकरंद**' में वर्णित है –

षडजं वदति मयूरो, वदति चातको ऋषभ तथा।
अजौ विरौति गांधार, कॉच क्वणति मध्यम।।
पुष्प साधारणे काले पिकः, कजूं ति पंचनम्।
अश्वश्च धैवतं चैव निषादं च गजस्तथा ।।[1]

अर्थात मोर षड्‌ज मे, बकरा गान्धार मे, कौच मध्यम में, कोयल,पंचम में घोड़ा धैवत में और हाथी निषाद में बोलता है। संगीत मकरंद केइस श्लोक का प्रयोजन केवल यह बताने के लिए ही होगा कि पशुपक्षियोकी प्राकृतिक ध्वनियों की नकल उतारनें के प्रयास में ही मनुष्यों का स्वरोंसे साक्षात्कार हुआ होगा।[2]

ठाकुर जयदेव सिंह जी ने लिखा है ''यद्यपिमानव के लिए संगीत नैसर्गिक (स्वाभाविक) है। तथापि संगीत का प्रादर्भाव एक कला के रूप में आरम्भ से ही नहीं हुआ। भारतीय चिन्तकों,ऋषियो, महर्षियों ने वषा तपस्या और साधना करके संगीत की ध्वनि औरगति का अनुभव किया और निष्कर्ष निकाला कि भारतीय संगीत कला केउद्‌गम और विकास में पूर्णतः नादब्रह्म का चमत्कार है, जिसे हमारेआचार्यो ने 'ओंकार' ध्वनि कहा है। ''यह सार्वकालिक, सनातन औरशाश्वत है। इसीलिए संगीत और विशेष रूप से भारतीय संगीत न तोकिसी व्यक्ति विशेष और न ही किसी देश–विशेष से सम्बन्धित है बल्कियह हृदय की भाषा है। जैसा **डॉ0 अरूण आप्टे** ने लिखा है–'' **Theomkar is beginning of music and this very reason music hasbeen a universal language.****

भारतीय मनीषियों की मान्यतानुसार यह कला विशुद्ध ब्रह्मविद्या है।जिसके उद्‌भव और विकास में ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आदि की दैवीयशक्तियॉ काम करती है। इसीलिए इस कला के आदि प्रेरक शिव, ब्रह्मा,सरस्वती गन्धर्व, किन्नर आदि माने गये है। आज से हजारो वर्षो से शिवको 'नटराज', देवी सरस्वती को ''वीणावादिनी' और कृष्ण को 'मुरलीधर'के रूप में चित्रित किया जाता है। जिसके मूल में यही भावना है किसंगीतकला ''दैवीय प्रेरणा'' से प्रादुर्भूत हुई।**डॉ0 जयदेवजी** के मतानुसार,[3]''सरस्वती'' शब्द संस्कृत भाषा कीसृ धातु से बना है, जिसका अभिप्राय 'सरकना' या गतिशील होना है।'सरस्वती' ब्रह्मा की वह शक्ति है जिसके द्वारा ब्रह्मा मे गतिशीलता आतीहै। इसी शक्ति से 'ब्रह्मा' ने विश्व का निर्माण किया और इसी शक्ति कापर्याय नाद है, और समस्त ब्रह्माण्ड नाद और गति की शक्ति से व्याप्तहै। इसीलिए 'सरस्वती' को काव्य संगीत इत्यादि ललित कलाओं कीजननी माना गया है। ''यही कारण है कि संगीत कला के आदि प्रेरकदेवी–देवताओं को माना गया है। क्योंकि 'संगीत' शब्द के लिए विभिन्न देशां की भाषाओं मे जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है यदि उनकेअर्थो पर दृष्टिपात किया जाए तो पता लगता है कि विश्व भर का'संगीत' दैवीय प्रेरणा से उत्पन्न हुआ। यूनानी भाषा में 'संगीत' के लिएमौसिकि (mousike) लैटिन भाषा में मसिका (musica) फ्राँसीसी भाषा मेंमसीक (musiaue) पुर्तगीज भाषा में मुसिका (musica) जर्मन भाषा मे मूसिक (musik) अंग्रेजी भाषा में (music) म्यूजिक। अरबी, फारसी आदि भाषाओं में संगोत के लिए मौसिकी शब्द का प्रयोग किया जाता है।

उपरोक्त सभी भाषाओं में संगीत के लिए प्रयुक्त किये गये म्युजिक,मुसिका, मूसीक आदि शब्दों का आधार यूनानी भाषा का शब्द 'म्यूज'[4](muse) है। यूनानी परम्परा मे 'म्यूज' शब्द का अर्थ है '' The inspiringGoddess of songs'' अर्थात गान् की प्रेरिका देवी। अतएव यह सिद्धकरता है कि केवल भारतीय आचार्यो, ऋषियो और मुनियों ने हीदेवी–देवताओं को संगीत का आदि प्रेरक नही माना है बल्कि जगत भरके संगीत के प्रेरणास्त्रोत देवी–देवता रहे हैं और भारतीय चिन्तको का तोपूर्ण विश्वास है कि संगीत एक ''ब्रह्म विद्या'' है। अतएव सगीत कीउत्पत्ति के सम्बन्ध में यह धार्मिक और दार्शनिक विचारधारा, अपने आपमें प्रमाणित है। संगीत की उत्पत्ति को यदि भौतिक शास्त्र विज्ञान केसिद्धान्तों की दृष्टि से देखा जाए तो ध्वनि यानी Sound की उत्पत्तिकम्पन (vibration) से होती है। किसी भी वस्तु या वाद्य पर यदि आघातकिया जाता है तो वस्तु कम्पित होती है उसी के कम्पन से ध्वनि कीउत्पत्ति होती है। अतएव ध्वनि की उत्पत्ति में गति यानी speed का भीसहयोग आवश्यक है। समस्त ब्रह्मांड (universe) ध्वनि और गति सेव्याप्त है।भौतिक शास्त्र में ध्वनि को दो प्रकार का बताया गया है, एक वहजो ध्वनि मधुर होती है, जो संगीत उपयोगी होती है, जिसे 'नाद' कहाजाता है। दूसरी जो कानों को अप्रिय लगती है जिसे 'राव' या 'शोरगुल'कहते है। चाहे 'नाद' हो और चाह राव दोनों प्रकार की ध्वनियों कीउत्पत्ति कम्पन या vibration से होती है। अन्तर यही है कि 'शोरगुल'या 'राव' के 'उत्पादक कम्पन'' अनियमित और क्षणिक होते है जबकि'नाद' क ''उत्पादक कम्पन'' नियमित और सतत होते हैं अतः यह ध्वनिमधुर और कानों को प्रिय होने के कारण इसकी संज्ञा 'नाद' है।'नाद' चूकि समस्त विश्व, चर–अचर सब में व्याप्त रहता है औरइसे आकाश का गुण कहा गया है इसीलिए भारतीय विद्वानों ने 'नाद' को'नादब्रह्मा' कहा है। 'नाद' की उत्पत्ति में 'गति' का भी महत्वपूर्ण स्थानहै, अतएव प्राकृतिक रूप से, ये ही ध्वनि की 'गति' संगीत के सुर औरलय

के रूप में, प्रयुक्त किए जाते है। अतएव संगीत निश्चित रूप से एक'प्राकृतिक' कला है। जिसकी उत्पत्ति मानव–जन्म के साथ होती है।क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वर ने 'कंठ' दिया है और मानवीय कण्ठ हीसंगीत कला की उत्पत्ति का प्रथम और प्राकृतिक (natural) स्त्रोत है।गले या कंठ में स्थिर स्वर तंन्त्रियों (vocal chords) ही स्वर उत्पन्नकरने वाला प्रथम साधन है, बल्कि 'मानवीय कंठ' ही वह पहला औरईश्वर प्रदत्त वाद्य (instrument) है, जिससे सर्वप्रथम की 'गुनगुनाहट'निकली होगी। इसलिए हमारे प्राचीन संगीत–आचार्यो ने शरीर में स्थितइस 'कंठ' को गात्र वीणा, शारीरी या शारिकिका कहा है। कंठ की इन्ही स्वर तन्त्रियों का आधार लेकर तन्त्रवाद्यां का निर्माण किया गया है।अतएव गात्रवीणा या मानवीय कंठ से संगीत की दुनिया ने विकास पाया।

इस प्रकार संगीत के स्वरों की उत्पत्ति मनुष्य जन्म के साथ हीहुई तथा सभ्यता और संस्कृति के उद्गम और विकास के साथ–साथसंगीत कला एक परिष्कृत और प्रतिष्ठित कला के रूप मे उभरती चलीगई। इसी कारण संगीत कला की उत्पत्ति की कहानी अति प्राचीन आरअनादि है।

अनुमानों एवं ऐतिहासिक उल्लेखों के अनुसार भारतीय औरपाश्चात्य विद्वानों के इस सम्बन्ध में भिन्न–भिन्न मत है जो निम्नलिखितहै :–

1– एक मत के अनुसार संगीत की उत्पत्ति वेदों के निर्माता ब्रह्मा नेयह कला शिव को प्रदान की और शिवजी से सरस्वती ने इस कला कोग्रहण किया अतः सरस्वती को 'वीणावादिनी'[5]कहा गया। सरस्वती जी सेइस कला को गन्धर्व नारद ने सीखा और इसे अन्य गन्धर्वो और किन्नरोंको सिखाया। फिर इन्हीं से महर्षि भरत, हनुमान आदि ऋषियों ने इसकला को प्राप्त करके भूलोक में इसका प्रचार–प्रसार किया।

2– कुछ ग्रन्थकारों के मत से महादेवजी (शिवजी) ने अपनेपूर्व–पश्चिम–उत्तर–दक्षिण और आकाशोन्मुख होने पर क्रमशःभैरव–हिडोल–मेंघ– दोपक और श्री ये पाँच राग प्रकट किए तथापार्वतीजी के मुख से कौशिक राग प्रकट हुए। पार्वती जी के 'शयन मुद्रा'यानी सोने की मुद्रा से शिव ने रूद्रवीणा का आविष्कार किया।

3– प्रमुख **'शिवस्तोत्र'** मे लिखा है कि त्रिजगत की जननी माता गौरी को स्वर्ग के सिंहासन पर बैठाकर शूलपाणि शिव ने नृत्य किया, सरस्वतीने वीणा और इन्द्र ने वेणुं यानी बांसुरी, ब्रह्माजी ने करताल, विष्णुजी नेमृदंग बजाई तथा लक्ष्मी जी ने गाना गया। इस नृत्यमय संगीत कोदेखने के लिए यक्ष, किन्नर, गन्धर्व और विद्याधर उपस्थित थे। इसआधार पर कहा जा सकता है, कि संगीत की गान–वादन और नृत्य इन तीनों कलाओं का विस्तार यहीं स हुआ।

4– **'संगीत दर्पण'** ग्रन्थकार पंडित दामोदर के मतानुंसार संगीत कीउत्पत्ति ब्रह्मा जी से हुई, ब्रह्माजी से यह संगीत कला शिव के पासआयी उसके बाद भरत मुनि आदि से इस कला का प्रचार पृथ्वी परहुआ।

5– एक अन्य मत के अनुसार– संगीत कला के आदि प्रवर्तक शिव है।शिव, स्वयं में 'नटराज' कहलाते है। तांडव नृत्य करते समय उन्होंनेडमरू जैसे वाद्य का प्रयोग किया है। यह नृत्य 'तांडव नृत्य' कहलाया। इन्द्र की सभा में गन्धर्वो द्वारा गायन, किन्नरां, द्वारा वादन और अप्सराओं द्वारा नृत्य किया गया। इन सभी देवी–देवताओं स पारंगत होकर मुनिनारद ने भरत को यह कला प्रदान की, तत्पश्चात् भरत ने इस कला काविस्तार पृथ्वी पर किया।

नृत्यावसाने नटराजराजो ननाद इक्कां नवपंचवारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धानेतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्।।[6]

6– **'नारदीय शिक्षा'** तथा बहुद्देशी ग्रन्थ में नारद ने सप्त स्वरों कीध्वनियों को पशु एवं पक्षियां की आवाज से उत्पन्न माना गया है– षडजवदति मयूरो, गावो रम्भन्ति चर्षभम्, अजा वदन्ती गन्धार, क्रोञ्चः वदतिमध्यम्, कोकिलो वदति पंचम अश्वस्तु धैवतं, निषाद कुंजरो। अर्थात् मयूर की बोली से षडज, गाय से रिषभ, अजा से गन्धार,क्रोंच पक्षी से मध्यम कोयल से पंचम, अश्व से धैवत और कुंजर यानीहाथी से निषाद स्वर निकला। संगीत के प्राचोन मनीषियों के इस मत काप्रतिपादन पाश्चात्य डारबिन ने किया है। पशु–पक्षियों की ध्वनि मे भीभिन्न–भिन्न स्वरों के अन्तराल पाए जाते है और प्रायः ये अन्तराल ऐसे होत ह जिनका मनुष्य–समाज अपनी संगीत कला मे आज भी कर रहा है। संगीत एवं संगीत के स्वरों की उत्पत्ति के विषय में ये भारतीय विचारधाराएँ है।

पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार–

1– फारसी के विद्वान का मत है कि हजरत मूसा पहाडों पर प्राकृतिकदृश्य देख रहे थे उसी समय आकाशवाणी हुई, जिसमे कहा गया किहजरत मूसा अपना असा (हथियार) पत्थर पर मार। हजरत मूसा ने जबअपना हथियार पत्थर पर मारा तो पत्थर के सात टुकड़े हो गये औरउनसे जो जलधाराएं निकली उन्हीं से सातस्वरों ''सरेगमपधनी'' कीउत्पत्ति हुई।[7]

2– एक विद्वान के अनुसार पहाड़ों पर ''मूसाकार'' नाम का एक पक्षीथा उसकी नाक में बांसुरी की तरह सूराख (छेद) थे इन्हीं सूराखों सेस्वरों का जन्म हुआ।

3– पाश्चात्य विद्वान फ्रायड के मतानुसार संगीत की उत्पत्ति एक शिशुके समान मनोविज्ञान के आधार पर हुई, जिस प्रकार रोना, चिल्लानाहंसना आदि सहज और स्वतः क्रियाएँ, जैसे बोलना–चालना, रोना–हँसनाहोती है उसी प्रकार संगीत मनुष्य की जन्मजात क्रिया है।[8]

4– इसी प्रकार जैम्स लौंग का भी विचार है, कि जिस प्रकार हमारीअन्य क्रियाएँ, जैसे बोलना– चिल्लाना, रोना,– हँसना आदि और स्वतःक्रियाएं है उसी प्रकार संगीत मनुष्य की जन्मजात क्रिया है।[9]इस प्रकार संगीत एवं उत्पत्ति एवं उद्गम के सम्बन्ध में भारतीयऔर पाश्चात्य दोनों विद्वानों के मतों में समानता है कि संगीत का मूलस्रोत वस्तुतः देवी–देवता है तथा यह कला मनुष्य की जन्मजात प्रवृत्तिहै। सभी के अन्दर सुर रहते है, जिसके संगीतक संस्कार प्रबल हो जातेह, वे कलाकार बन जाते है अन्य सभी व्यक्ति के सुरा को गुनगुनानेऔर सुनने की क्षमता रखते हैं। यह कला और इसकी उत्पत्ति का साधन'कंठ' ईश्वर ने मनुष्य जन्म के साथ भेजा है। मनुष्योत्तर प्राणी भी इसीउपकरण द्वारा अपने भावों को भिन्न–भिन्न आवाजों से व्यक्त करते हैं,जैसा डॉ0 श्रीधर शरच्चन्द्र परांजपें ने अपनी पुस्तक 'संगीत बोध' में लिखा है– ''कंठ मानव के लिए सहज एवं स्वाभाविक देन है और यहीउसके गीत तथा वाद्य के निर्माण एवं उनके स्वर–क्षेत्र को निर्धारित करता है।'' हमारे ऋषियों और मुनिया ने मानवीय कंठ की तंन्त्रियाँ(vocal (chords) के आधार पर ही बाद में जितने भी मानव–कृत (manmade) तन्त्रवाद्य बने उनका आधार मानवीय कंठतन्त्री ही माना गया।पाश्चात्य विद्वान भी कंठ को इसी क्षमता का मानते हुए 'स्वरोत्पादकयन्त्र' के नाम से स्वीकार करते है। अतएव निश्चित रूप से कहा जासकता है कि संगीत की उत्पत्ति का मूल मानवीय कंठ या कंठतन्त्री है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. नारदीय शिक्षा पृष्ठ 28
2. भारतीय संगीत का इतिहास– ठाकुर जयदेव सिंह पृष्ठ सं0 99
3. भारतीय संगीत का इति0 ठाकुर जयदेव सिंह पृष्ठ सं0 5 और 6
4. भारतीय संगीत का इतिहास– एस0एए0 परांजपे पृष्ठ सं0 9
5. भा0सं0 का0 इति0 ठा0 जयदेव सिंह पृ0सं0 6–7
6. भा0सं0 का0 इति0 ठाकुर जयदेव सिंह पृष्ठ 262
7. भारतीय संगीत शास्त्र– तुलसी राम देवांगन पृष्ठ–16
8. भारतीय संगीत का इतिहास उमेश जोशी पृष्ठ 23
9. भारतीय संगीत का इतिहास उमेश जोशी पृष्ठ 24